Knowledgeable Research –Vol.1, No.11, *June 2023*

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

'कोरोनाकोपशतकम्' में लोकमंगल की भावना

डॉ.अरुण कुमार निषाद
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय,कटकाखानपुर,
द्वारिकागंज, सुल्तानपुर
Email: -arun.ugc@gmail.com

****

ABSTRACT

एक वैश्विक महामारी जिसने सम्पूर्ण विश्व को देखते-देखते अपने आगोश में ले लिया । संसार की बड़ी-बड़ी महाशक्तियाँ भी इसके सामने घुटने टेकने पर मजबूर हो गई। ऐसे में कलमकारों की लेखनी अपने वश में रह नहीं पाई और उन्होंने अपने दिल की बात कलम द्वारा कागज पर उतार ही दिया । साहित्य समग्र रूप से मानवता का चिन्तन करता है । लोकमंगल ही साहित्य का मूल होता है । साहित्य सदैव लोकमंगल की बात करता है । उसे समझना होता है है कौन सी बात समाज के हित में हैए कौन नहीं । इसी लोकमंगल की भावना को केन्द्रबिन्दु बनाकर कविवर डॉ.बालकृष्ण शर्मा ने अपने शतककाव्य 'कोरोनाकोपशतकम्' की रचना की है ।

Keywords: *समकालीन, संस्कृत कवि, कविता, कोरोना, कोरोनाकोपशतकम्*

****

प्रस्तावना

डॉ.बालकृष्ण शर्मा का जन्म 1अप्रैल सन् 1962 ई. को उ.प्र. के बस्ती जिले के गौरा पाण्डेय नामक ग्राम में हुआ । आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयए वाराणसी से उच्च शिक्षा प्राप्त की है । काशी में किये शास्त्रीय अध्ययन से प्राप्त वैदुष्य इनके अध्यापन में एवं काव्य रचनाओं में उभरकर सामने आता है । आपने विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन पारंगत आचार्यों की सन्निधि में प्राप्त किया है । डॉ.बालकृष्ण शर्मा वर्तमान में शासकीय संस्कृत महाविद्यालय लश्करए ग्वालियर में सह प्राध्यापक एवं साहित्य विभागाध्यक्ष हैं । संस्कृत

जगत् को महत्त्वपूर्ण योगदान देने के लिए इन्हें महामहिम राज्यपाल द्वारा म.प्र. संस्कृत बोर्ड का 'वागर्थ सम्मान' (2007 ई.) से सम्मानित किया गया है । कवि डॉ.बालकृष्ण शर्मा वाग्देवी सरस्वती के समुपासक हैं । कवि डॉ. बालकृष्ण शर्मा पर कविभारती की कृपा छात्र जीवन में ही हो गयी थी । इन्होंने स्फुट पद्य रचनाएं करना आरम्भ कर दिया था । शनैः शनैः प्रवर्धमान वाणी की साधना के फलस्वरूप इन्होंने मातृभूमि के प्रति प्रेमभावना से ओतप्रोत अपनी पहली पूर्ण काव्यकृति भारताभिज्ञानशतकम् के रूप में संस्कृत जगत् को समर्पित की जो दूर्वा (मार्च-नवम्बर 1998, पृष्ठ 17-33) में प्रकाशित हुई थी । एक अन्य कृति भावपञ्चासिकाकाव्यम् भी दूर्वा (जनवरी-मार्च 2007, पृष्ठ 63-70) में प्रकाशित हुई । कई स्फुट रचनाएँ प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होकर सहृदयों द्वारा सराही गयी हैं । निरन्तर प्रकाशित हो रहीं इन रचनाओं ने कवि को कविगोष्ठियों में सम्मान प्राप्त कराया है । अब तक ये कई बार बड़े मंचों पर संस्कृत काव्यपाठ कर चुके हैं । इनकी 50 से अधिक मौलिक संस्कृत कविताएँ हैं जो राष्ट्रभक्तिए महाकवि कालिदासए भवभूतिए प्रशस्ति आदि विषयों पर केन्द्रित हैं ।

ष्कोरोनाकोपशतकम्' डॉ.बालकृष्ण शर्मा द्वारा प्रणीत शतककाव्य है। कोरोनामहाव्याधि पर केन्द्रित इस शतककाव्य में 102 पद्य शार्दूलविक्रीडित छन्द में निबद्ध हैं । अन्तिम दो पद्यों में कवि का परिचय है । इस काव्य में पद्य के साथ उसका अन्वयए संस्कृत टीकाए हिन्दी अनुवाद और काव्यसौन्दर्य भी स्वयं कवि ने दिया है ।

डॉ.बालकृष्ण शर्मा इस कोरोना नामक राक्षस से जन मानस की रक्षा के लिए भगवान शंकर का स्मरण करते हैं । वे लिखते हैं कि भगवान भोलेनाथ ही अब हमारी रक्षा कर सकते हैं और कोई नहीं ।

को नावेति समस्तविश्वपटले व्याप्तं महत्ताण्डवं

कोरोनासुरकोपसम्भवमहो! को नाम देश: क्षम: ।

कोरोनापरिपीडितो जगति वा तस्योपचारेऽखिले

को रोद्धुं क्षमते विहाय च शिवं दुष्टस्य दु:साहसम् ॥ 2॥ (30)

भगवान श्रीकृष्ण को याद करते हुए डॉ.बालकृष्ण शर्मा लिखते हैं कि श्रीकृष्ण में ही कोरोना को दूर करने की सामर्थ्य है ।

कोरोनाकुलमानवीयभुवने नारायण: केवलम्

कोरोनानार्तिहर: सदैव जगतां वंशीधर: श्रीधर:

को दावाग्निपरीतदीर्घविपिनं पातुं विहायाम्बुदं

पारं याति कृषीवलैकशरणं धाराधरं सत्वरम् ॥ 4॥ (32)

कोरोना से रक्षा के लिए डॉ.बालकृष्ण शर्मा ब्रह्माए विष्णुए महेश सभी से प्रार्थना करते हैं ।

कीटाणुर्विभुतामुपैति सपदि प्रच्छन्नरूपो भवे

लीलारूपधरस्य यस्य कृपया कारुण्यसम्पूर्णया ।

तुच्छ: सूक्ष्मवपु: समस्तमनुजानतुं समर्थश्चर:

विष्णु: स: परिपातु मानवकुलं कोपाद् विषाणोस्सदा ॥5॥ (33)

डॉ.शर्मा जी माँ दुर्गा से कोरोना से बचाव के लिए विनती करते हैं । वे लिखते हैं-

कोरोनापरिपूरितेषु जगतीद्वीपेषु सप्तेषु हा!

हाहाकारमयेषु वै यमपुरी भूमौ हि राराजते ।

राजा धर्मपतिर्विषाणुमहिषारूढ़श्च रात्रिन्दिवम्

एकैकं कवलीकरोत्यविरतं हे चण्डिके! पाहि न : ॥11॥ (38)

कविवर डॉ.बालकृष्ण शर्मा कहते हैं कि भगवान शिव ने सदैव हमारा कल्याण किया है । इस बार भी इस कोरोना महामारी से वही महम सबको बचायेंगे ।

कालेऽस्मिन विकटे विषाणुभरिते को याचते नेश्वरं

कल्याणावहमाशुतोषमवनं गौरीशविश्वम्भरम् ।

आपन्नञ्च यदा यदा त्रिभुवनं कष्टं तथा सङ्कटम्

आपन्नार्तिहरस्तदा किल हरो रक्षोत्सदा मानवम् ॥24॥ (51)

× × × × × × ×

हे विश्वेश! विपत्तिमाशु हरतात् कुख्यातकीटन्तथा

शूलेनाजहि सत्वरं च सकलं विश्वम्पुन: फुल्लतात् ॥

सन्तानस्तव खिद्यते जहि गदं काले समीपे स्थिरे

क: पारत्र करोति दु:खजलधिं कालस्य पार्श्वे गत: ॥ 27॥ (53)

निष्कर्ष

संसार के सभी मनुष्यों को स्व की अपेक्षा पर को अधिक महत्त्व देना चाहिए । अपने कल्याण के साथ-ही-साथ सबके कल्याण के बारे में सोचना चाहिए । एक अच्छा और सफल साहित्यकार वही हैए जो जन-कल्याण के विषय में सोचे ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

कोरोनाकोपशतकम्, डॉ.बालकृष्ण शर्मा, अमन प्रकाशन सागर (म.प्र.), प्रथम संस्करण 2020 ई.